फ़रीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने - बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक ज़रिया

रुपये-पैसे की बहुत ज़्यादा दिक्कत है। जरूरत समझने वाले कृपया कदम उठायें।

नई सीरीज नम्बर 169 जुलाई 2002

मैं - हम - हम में मैं

शिवालिक प्रिन्ट्स लिमिटेड मजदूर : " बात अप्रैल 2000 की है। आज की तरह तब भी एस.पी.एल. में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट थी। मैं रात की शिफ्ट में था। सैक्टर-6 में प्लॉट 47-48 में ड्युटी कर रहा था। डाइंग डिपार्टमेन्ट में एक जिगर मशीन से रात साढे 11बजे जोर की आवाज हुई और मशीन रुक गई। फोरमैन ने बगल की जिगर वाले आपरेटर से पूछा कि इस मशीन पर काम करने वाला लड़का कहाँ गया? मशीन बन्द पड़ी है और लड़का दिखाई नहीं दे रहा। तब वह जिगर आपरेटर बोला कि कपड़े में सलवट आ रही थी जिसे वह लड़का हाथ से ठीक कर रहा था। सुबह देख लेंगे कह कर उसे ऐसा करने से मना किया था पर फोरमैन की डाँट से डरता वह आपरेटर हाथ से कपड़े की सलवट निकालता रहा था। कहीं ऐसा तो नहीं है कि मशीन में लिपट गया हो ? कपड़े का रंग उस समय लाल चल रहा था इसलिये खून का रंग दिखाई नहीं दिया। तेज आवाज के साथ बन्द हुई मशीन ने शंका बढा दी थी इसलिये फोरमैन ने बगल की डिपार्टमेन्ट से कैंची ला कर कपड़ा काटा। डेढ सौ मीटर कपड़ा हटाने के बाद टूटी-फूटी हड्डियों और माँस के रूप में गायब जिगर मशीन आपरेटर की लाश मिली। डाइंग डिपार्ट में 150 जिगर मशीनों पर काम करते 150 आपरेटर और कुछ अन्य मजदूर लाश के चारों तरफ खड़े हो गये।

" ठेकेदार लल्लन गिरी को घर फोन किया। तत्काल फैक्ट्री पहुँच ठेकेदार ने झाड़ू लगाने वाले से लाश बटोरवा कर वहीं थान में से कपड़ा फाड़ कर उसमें बँधवाई। तीन सेक्युरिटी वालों और फोरमैन ने डाँट-फटकार कर जिगर आपरेटरों को मशीनें चलाने में लगा दिया। कपड़े में बँधी लाश को ठेकेदार उसी समय गाड़ी में ले गया। लाश का क्या किया पता नहीं। रात-भर और फिर दिन में भी फैक्ट्री ऐसे चलती रही जैसे कुछ हुआ ही नहीं हो। दो साल हो गये हैं पर रात को सपने में पूरा दृश्य मेरी आँखों के सामने घूम जाता है।

" जिगर मशीन में पिसे मजदूर का नाम नहीं मालूम। हाँ, वह बिहार से था। सैंकड़ों ने रात को उसकी लाश देखी थी। पूरी फैक्ट्री के वरकर जान गये थे लेकिन कोई कुछ नहीं बोला। पुलिस-वुलिस कोई नहीं आई।

" चार सैक्टर की झुग्गियों में मृत मजदूर रहता था। दो दिन वह घर नहीं पहुँचा तो तीसरे दिन उसकी पत्नी फैक्ट्री गेट पर आई। फैक्ट्री गेट पर कम्पनी वालों ने कह दिया कि उस नाम का वरकर वहाँ काम ही नहीं करता था। स्त्री लौट गई। किसी मजदूर ने झुग्गियों में जा कर पत्नी को पति के फैक्ट्री में मरने की बात बताई। रोती-बिलखती औरत दूसरी बार एस पी एल गेट पर पहुँची और रोने लगी। कम्पनी ने 50 हजार और ठेकेदार ने 10 हजार रुपये मृत मजदूर की पत्नी को दे कर मामला रफा-दफा कर दिया।

" इस 18 जून को प्लॉट 47-48 में ही फिनिशिंग डिपार्टमेन्ट में एक मजदूर कमर से मशीन में फँस गया। आपरेटर ने जैसे-तैसे उसे निकाला तो वह वरकर बेहोश हो कर गिर गया। उसके पेशाब के रास्ते खून आया था। अन्य मजदूरों की तरह उसकी भी ई.एस.आई. नहीं थी। कम्पनी बेहोश मजदूर को गाड़ी में सैक्टर-7 में दास नर्सिंग होम ले गई। ठीक होने के बाद वह वरकर ड्युटी के लिये फैक्ट्री पहुँचा तो कम्पनी वाले बोले कि मर कर हमारे गले पड़ता इसलिये तुझे नौकरी से निकाल दिया है और दूसरा आदमी रख लिया है।"

कानून-कानून.....

एल के टेलिलिंक्स मजदूर : " प्लॉट 141 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में सब वरकरों से रोज 4 घण्टे ओवर टाइम जबरन करवाते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से और मना करने वाले मजदूर को डाँटने-फटकारने, पीट तक देने के अलावा उसकी उस दिन की गैर-हाजरी लगा देते हैं। कैजुअल वरकरों की तनखा 1700 रुपये महीना — ई.एस.आई. कार्ड नहीं, पी.एफ. नहीं। परमानेन्ट मजदूरों की तनखा 2015 है और इसी में से ई.एस.आई. तथा पी.एफ. के पैसे काट लेते हैं।"

अप्रेन्टिस : " टालब्रोस इंजिनियरिंग में हमें रात की शिफ्ट में बुलाते हैं। सिखाने की बजाय हमें उत्पादन में जोत देते हैं। इनकार करने पर उपस्थित होते हुये भी अनुपस्थिति लगा देते हैं।"

एस्कोर्ट्स मजदूर : " दूसरे शनिवार की छुट्टी में काम करने बुलाते हैं। फ़स्ट और थर्ड प्लान्ट में इस ओवर टाइम काम की पेमेन्ट अब कानून अनुसार डबल रेट से करते हैं लेकिन फार्मट्रैक प्लान्ट में मेन्टेनैन्स वरकरों को पैसे सिंगल रेट से ही देते हैं।"

ओमेगा ब्राइट स्टील वरकर : " महीने का वेतन 1680 रुपये और भर्ती ठेकेदार के जरिये। तीन महीने की ऐसी भर्ती के लिये 300 रुपये रिश्वत लेते हैं।"

हिन्दुस्तान वैक्यूम ग्लास मजदूर : " भट्टियों पर 6 घण्टे की शिफ्ट वालों की दिहाड़ी 30 रुपये। ठेकेदारों के जरिये रखे अन्य वरकरों को 1200 रुपये महीना। तनखा 20 तारीख से पहले नहीं। दो-दो महीने इन्सेन्टिव के पैसे रोक लेते हैं और ओवरटाइम के अक्टूबर 01 के पैसे भी आज 14 जून तक नहीं दिये।"

नेशनल एयर प्रोडक्ट्स वरकर : " 13/1 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में अप्रैल और मई की तनखायें आज 15 जून तक नहीं दी हैं।"

ग्रेविटास मजदूर : " प्लॉट 61 सैक्टर-59 स्थित फैक्ट्री में हम 35-40 वरकर काम करते हैं पर हमें दिखा नही रखा। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। कच्चे रजिस्टर पर हाजरी। हैल्परों को 1400 रुपये महीना।"

फर आटो वरकर : " जनवरी की तनखा कल, 17 जून को दी। फरवरी, मार्च, अप्रैल और मई की तनखायें अभी नहीं दी हैं। दो साल से कम्पनी हमारी पी.एफ. जमा नहीं करवा रही।"

श्याम अलॉय्ज मजदूर : " प्लॉट 40 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों को 55 रुपये प्रतिदिन देते हैं। कोई छुट्टी नहीं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं, पी.एफ. नहीं और चोट लगने पर निकाल देते हैं।"

भोगल्स शूज वरकर : "26 डी एल एफ स्थित फैक्ट्री में मई का वेतन हमें आज 18 जून तक नहीं दिया है। शिकायतों पर श्रम विभाग टालमटोल करता है।"

इन्जेक्टो मजदूर : " अप्रैल और मई की तनखायें हमें आज 22 जून तक नहीं दी हैं।"

सुपर सील वरकर : " मई का वेतन 15 जून तक नहीं दिया है।"

नेपको गियर मजदूर : " मई की तनखा आज 22 जून तक नहीं दी है।"

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद-121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

....खतों-पत्रों से....

✶.....आर्थिक व अन्य सहयोग के अभाव में केवल सलाह , वकील के नाते भी , दे रहा हूँ। अखबार में प्रकाशन के साथ-साथ , बल्कि अधिक जरूरी यह है कि हर मामले की साक्ष्य सहित रिपोर्ट सम्बन्धित लेबर विभाग , ई.एस. आई.., पी.एफ.आदि में लिखित में करना .....कम से कम वे लोग रिश्वत ही माँगने आयेंगे..... कोई अवैतनिक वकील मिल जाये तो लेबर कोर्ट में भी घसीटा जा सकता है। एक कहावत है कि सौ पढत और एक लिखत ।..... लाख रुपये पाने वाले से हजार रुपये पाने वाले , सभी का शोषण होता है। उन्हें भी टार्गेट देते हैं , उनकी भी नींद हराम होती है – गोलियाँ खाते हैं , फैमिली लाइफ कुछ नहीं। बस पैसा ही पैसा दिखता है। दुष्चक्र में फँसे रहते हैं। .... – कृष्ण चन्द्र , इन्दौर [ओल्ड मैन (72), नो वर्किंग एण्ड नो अर्निंग , नो पी.एफ. , नो पेन्शन , नो बैंक अकाउन्ट]

✶... अमीरी-गरीबी की खाई दिनोदिन बढती ही जा रही है। हम सभी सच्चाई जानते हुये भी चुप हैं – शायद इसीलिये सच और कडुआ होता जा रहा है। लेकिन यह विष भी हमें ही पीना होगा ; कोई शंकर आसमान से नहीं उतरेगा। स्थितियाँ निराशाजनक हैं फिर भी हमें आशावान रहना चाहिये –

घोर निराशा के घर में ही पलता है संबल।
समय बदलता है, बदलेगा, आज नहीं तो कल।।

– राजेन्द्र , लखनऊ

✶... आज के चूहा-दौड़ में मनुष्य इतना खुदगर्ज हो गया है कि वह किसी भी कीमत पर ऊपर उठना चाहता है, चाहे इसमें उसे अपनों के शवों पर से भी हो कर गुजरना पड़े। आज आचार और नैतिकता का पाठ सब भूल गये हैं और यह चाहते हैं कि आनेवाली पीढी भी यही सीखे – जैसे तैसे भी हो , ऊपर चढ़ते चले जाओ। परन्तु परिणाम भी भुगत रहे हैं – नींद की गोलियाँ , हैपरटेंशन , हार्ट अटैक , मधुमेह ....

– चन्द्र मोलेश्वर , अलवाल , आन्ध्र

✶ नेताओं के दिल में तो बस है कुर्सी की चाह
मजदूरों के हितवर्धन की, नहीं उन्हें परवाह

– शिवराम 'उजाला' , छिन्दवाड़ा

✶ जीवन की गाड़ी को सुचारू गति देने के तमाम प्रयासों के बावजूद वर्तमान व्यवस्था में सामान्य जन-जीवन अस्त-व्यस्त है। इस व्यवस्था से अपरिचित मैं भी तमाम सुनहरे दिनों के सपने संजोये था , मेरा मन उड़ान भरता था। सगे-सम्बन्धी ड्राइवरों से परिचय के बाद गाड़ी चलाने की प्रबल इच्छा जागृत हुई। इसी उद्देश्य से कलकत्ता गया। वहाँ खलासी का काम प्रथम तौर पर करना पड़ा। डेढ वर्ष के अनुभव में सारी विकृतियाँ परत-दर-परत उघड़ कर सामने आई। चौबीस घण्टे गाड़ी चलती जिसमें हमें सोने , खाने , नहाने का स्थाई समय नहीं देते थे। हमारे साथ बदतमीजी का ऐसा आलम था कि हम लिख नहीं सकते। गाड़ी धोना , कालिख से सने हाथ-पाँव , दिल-दिमाग से कुंठित। शारिरिक एवं मानसिक शोषण के विरोध का परिणाम होता था हमें टाइम से खाना नहीं देना, सोने नहीं देना , जँगल में उतार देने की धमकी। रिश्तेदारी के कारण डेढ़ वर्ष खलासी रहने के बाद सैकेन्ड ड्राइवर का काम मिला। 24 घण्टे की ड्राइविंग में फस्ट ड्राइवर 8 घण्टे और सैकेन्ड ड्राइवर को 16 घण्टे गाड़ी चलानी पड़ती है। खलासी को 300 रुपये और सैकेन्ड ड्राइवर को 700 रुपये महीना देते और इन पैसों का भी कोई टाइम नहीं। गाड़ी के साथ ही फस्ट व सैकेन्ड ड्राइवर और खलासी का इन्शुरेन्स होता है तथा एक्सीडेन्ट होने पर सब इन्शुरेन्स के पैसे कम्पनी उठा लेती पर वरकरों को चोट-चपेट की दवा-दारू या मृत्यु पर हर्जाना नहीं देती। कलकत्ता-नागपुर रूट पर डेढ साल सैकेन्ड ड्राइवर का काम कर मैं दिल्ली चला आया हूँ।

– ओम प्रकाश , ओखला , दिल्ली

✶ वर्तमान व्यवस्था ने नौकरी को इस हद तक महत्वपूर्ण बना दिया है कि नौकरी न रहने पर आज की तारीख में इन्सानं की कोई कदर ही नहीं है। इसलिये लोग लाख परेशानियों के बावजूद भी नौकरी के लिये जी जान से लगे पड़े हैं। ... मैं पिछले 3 साल से गाड़ी चला रहा हूँ लेकिन ढँग से रहने-खाने का तो दूर , प्यार से कोई बात भी नहीं करता ... हर पल एक वर्ष के समान गुजरता है। मोटर मालिक से फायदे और नुक्सान का रिश्ता है , पुलिस वालों से छत्तीस का आँकड़ा चलता है और लोगों की नजर में हम ड्राइवरों के लिये तिरस्कार होता है। इन सब पीड़ाओं ... को झेलते-झेलते हम मादक पदार्थों का सहारा लेते हैं.... – अजय , ओखला , दिल्ली

✶.... 1961 में कृषि स्नातक की शिक्षा प्राप्त कर उत्तर प्रदेश राजकीय कृषि विभाग में नौकरी स्वीकार कर ली।... 5 वर्षों की नौकरी में 20-25 वर्ष की आयु तक जो कुछ भी सीखा उसके विपरीत व्यवहार करने की विवशताओं और बाध्यताओं का सामना करना पड़ा। 1965 में असंतोष , विद्रोह और निराशा की सम्मिलित अनुभूतियों के कारण तत्कालीन व्यवस्था को बदल डालने की प्रेरणा मिली और धीरे-धीरे 4-5 वर्षों में इस प्रेरणा ने मेरे जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर दिया। 1970 में व्यवस्था परिवर्तन के संकल्प के साथ 1971 में कृषि विभाग की नौकरी छोड़ दी।

.... आज के युग की एवं समय की रफ्तार बहुत तेज है और लोगों की स्मृति बहुत कम। लोग व्यस्त कम हैं , अस्त-व्यस्त अधिक हैं। आज का युग विज्ञापन एवं मीडिया का युग है।.....

वर्तमान के हालात को " अंधेर नगरी चौपट राजा" की श्रेणी में रखा जा सकता है। आज के आधुनिक सभ्य समाज एवं बौद्धिक वर्ग आधारित नगर उन पागलों की बस्ती-नगरी की तरह व्यवहार कर रहे हैं जहाँ नगर में जगह-जगह आग लगी है , उपद्रव एवं विप्लव हो रहे हैं , बलवों के कारण भगदड़ मची हुई है परन्तु फिर भी कुछ लोग इससे बेखबर , इन्हीं हालातों के बीच अपने मकान जल्दी-जल्दी बनवा रहे हैं और कुछ लोग भाँग-शराब पी कर अपनी मौज-मस्ती , नाच-रंग में डूब कर आसन्न संकट की परवाह नहीं कर रहे हैं। ऐसे लोगों को इस बात का अहसास ही नहीं है कि जो कुछ वे बना रहे हैं अथवा मौज-मस्ती कर रहे हैं वह आस-पास लगी आग के विकराल होने पर , फैलने पर , वहाँ हो रहे उपद्रव , बलवे , विप्लव में जल्दी ही सब कुछ स्वाहा , विध्वंस हो जाने वाला है।.....

– प्रमोद कुमार , ऋषिकेश

✶ झूमते खेत की फसलें
दूर तक डामर की सड़कें
धड़कती रेल की पटरी
इमारत यह गगनचुम्बी
नहीं वरदान ईश्वर का
किसी के श्रम की गाथा है।
वही अंगुली रसोई में
चुने जो दाल से कंकड़
पहुँच कर दफ्तरों में
साहिबों का कर रही टंकण.....
कभी फुटपाथ पर सो कर
कभी तकदीर पर रो कर
संभाले गोद में शैशव
गर्भ में भावी पाले।
तगाड़ी ईंट हाथों में
सजीले स्वप्न आँखों में
कभी वह तोड़ती पत्थर
इलाहाबाद के पथ पर .....
उसे बेघर कहें कैसे
हमारे घर बनाती है .....

– सुषमा , धांगध्रा , गुजरात

✶ सड़क के किनारे
बनती नालियों के बगल में
जून की तपती धूप में
जल रही थी कुछ औरतें।
हैं पसीने से तरबतर
अर्ध नग्नता से बेखबर
सूखे स्तनों पे विक्षिप्त से
मासूम जान की नजर।
मैं देखता हूँ उनको जब
ड्युटी पे जा रहा होता.....
स्थिर हो मौन बन
देखता हूँ श्रेष्ठ बन।
किस तरह मैं श्रेष्ठ हूँ ?
ढक न सकता जो ये तन.....

– ओम प्रकाश , ओखला , दिल्ली

ऐसी है हकीकत जिससे निपटना है

★ज्वाला स्टील कारपोरेशन मजदूर : "प्लॉट 124 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 40-42 वरकर काम करते हैं पर ई.एस.आई. में कुल 14 वरकर दिखा रखे हैं जिनमें 5-6 मजदूर हैं और बाकी स्टाफ के हैं।

"दो शिफ्ट हैं। दस-दस घण्टे की ड्युटी है, 2 घण्टे का कोई ओवर टाइम भुगतान नहीं। जबरदस्ती गेट बन्द करके काम करवाते हैं और कहते हैं कि हमारे यहाँ 10 घण्टे की ड्युटी है। **श्रम विभाग में शिकायत की तो लेबर इन्सपैक्टर बोला कि 10 घण्टे की ड्युटी करते रहो, नौकरी से नहीं निकालने दूँगा !**

"काम होने पर 10 घण्टे बाद भी जबरदस्ती रोकते हैं और कारीगरों को उसका भी कोई ओवर टाइम नहीं देते – कहते हैं कि स्टाफ में हो। हैल्परों को 10 घण्टे बाद का ओवर टाइम देते हैं। विरोध करने पर पिछले साल 4 मजदूरों को निकाल दिया– केस चण्डीगढ हो कर लेबर कोर्ट में आ गया है।

"फैक्ट्री में भारी काम है और एक्सीडेन्ट होते रहते हैं। **चोट लगने पर फस्ट एड के बाद दवाई भी नहीं, छुट्टी के पैसे नहीं और ज्यादा चोट लगने पर निकाल देते हैं।** दिसम्बर 2000 में कॉयल गिरा और एक मजदूर उसके नीचे दब गया। क्रेन लगा कर मुश्किल से कॉयल हटाया। मजदूर का पैर टूट गया था और हाथ की नस कट गई थी। वह हैल्पर था और उसकी ई.एस.आई. नहीं थी। कम्पनी उसे प्रायवेट नर्सिंग होम में ले गई। तीन दिन हाथ की कटी नस से खून निकलना बन्द नहीं हुआ था। थोड़ा ठीक होते ही वह आराम व दवा-पट्टी के लिये घर चला गया। गाँव से लौटा तो उसे ड्युटी पर नहीं लिया। उस एक्सीडेन्ट का कारण था दो की जगह मैनेजमेन्ट द्वारा एक मजदूर लगाना।

"तीन साल पहले की बात सुनिये। कम्पनी ने राम किशोर नाम के टरनर को दिल्ली से बुलाया था। वह बहुत कुशल कारीगर था और किसी की दाब बरदाश्त नहीं करता था। कुछ ही दिन में इससे कम्पनी को सिरदर्द हो गया। **उसे निकालने के लिये चोरी की साजिश रची।** वरनीयर चोरी का आरोप लगा कर रात की शिफ्ट में राम किशोर के हाथ बँधवा कर पहले तो मैनेजिंग डायरेक्टर दीपक बन्सल ने खुद पीटा और फिर पुलिस से पिटवाया। संजय कालोनी में किराये के कमरे में राम किशोर हफ्ते-भर चारपाई पर पड़ा रहा और नौकरी छोड़ कर चला गया। **राम किशोर के नौकरी छोड़ने के दो दिन बाद वह वरनीयर फैक्ट्री में ही मिल गया और आज भी वही वरनीयर इस्तेमाल होता है।** इसी प्रकार की हरकत सुभाष सुपरवाइजर के साथ की गई थी। मजदूरों के पक्ष में बोलने पर कम्पनी ने सुपरवाइजर सुभाष का गेट रोक दिया था। फिर हिसाब के लिये सुभाष को फैक्ट्री बुलाया और फैक्ट्री गेट पर गुण्डों से पिटवाया था।

"तनखा समय पर नहीं देते और माँगने पर धमकी देते हैं, मार-पीट तक देते हैं। मई का वेतन कुछ को 14 जून को दिया, कुछ को आज 15 को और कुछ को देना अभी बाकी है।"

★के.एस. इन्टरप्राइजेज वरकर : "सैक्टर-22 वैष्णो मन्दिर के पीछे संजय कालोनी में के.एस. इन्टरप्राइजेज, के.एस. मशीन टूल्स, के.एस. फैब्रिकेशन आदि नामों से काम होता है। प्लास्टिक पाइप की मशीनरी बनती है और 70-80 मजदूर काम करते हैं। यहाँ हैल्परों को 1200-1300 और आपरेटरों को 1800-2300 रुपये महीना तनखा थी और दो-दो महीने पैसे नहीं देते थे। मैनेजिंग डायरेक्टर सोहन नरूला गाली देता था, हाथ भी उठा देता था और जब चाहे निकाल देता था। इस सब के विरोध के लिये हम लोगों ने आपस में तालमेल किये और मदद के लिये एक यूनियन के पास पहुँचे तो उन्होंने पहले एक हजार रुपये देने को कहा। तब हम ने दूसरी यूनियन का पल्लू पकड़ा और हम ने डी सी, एस पी, श्रम विभाग, ई.एस.आई. और पी.एफ. में शिकायतें की। हमें दबाने के लिये कम्पनी ने पिछले साल के आरम्भ में हम में से 6 को नौकरी से निकाल दिया। एक ने माफी माँग कर ड्युटी ज्वाइन कर ली पर बाकी 5 ने श्रम विभाग में कार्रवाई जारी रखी और चण्डीगढ हो कर केस लेबर कोर्ट में आ गया है। हमारे विरोध के कारण गाली देना और हाथ उठाना बन्द हुआ। तनखायें बढानी पड़ी हैं लेकिन 2133 पर हस्ताक्षर करवा कर अब भी कई हैल्परों को पैसे कम देते हैं। शिकायतों पर अफसर आते हैं और मुट्ठी गरम कर चले जाते हैं। कल 29 जून को सब मजदूरों को काम से निकाल दिया और मैनेजिंग डायरेक्टर की शिकायत पर आज, 30 जून को मुजेसर थाने में पुलिस ने सुबह 4 घण्टे मजदूरों को बैठाये रखा तथा अब फिर 5 बजे थाने बुलाया है।"

★लिसनेवल आटोलेक लिमिटेड मजदूर: "19/6 मथुरा रोड़ स्थित कम्पनी आटो इग्निशन ग्रुप की है। यहाँ 135 परमानेन्ट और ठेकेदारों के जरिये रखे 80 वरकर ट्रैक्टरों, कारों आदि के बिजली यन्त्र बनाते हैं: 32 तरह के स्टार्टर, 6 प्रकार के आल्टरनेटर, आरमेचर, रेग्युलेटर, डायनैमो, स्टेटर, एस एस डी स्विच, 42 एम टी स्विच, 4 एस टी स्विच, फील्ड कॉयल, एम एस बॉडी आदि।

"उत्पादन की माँग बहुत ज्यादा है। उत्पादन-उत्पादन ने हमारी नाक में दम कर रखा है। मानसिक श्रम बहुत ज्यादा है, शारिरिक श्रम बहुत ज्यादा है। इधर एक मिनी एग्रीमेन्ट के जरिये 50 से 125 प्रतिशत वर्क लोड बढा दिया है तथा अभी कम्पनी उत्पादन और बढाने की बात कर रही है। **मशीन खराब हो जाने की स्थिति में भी कम्पनी निर्धारित उत्पादन माँगती है और क्योंकि यह हो नहीं सकता इस पर मजदूरों को चेतावनी पत्र देती है।** हमारे काबू से बाहर के कारणों से उत्पादन कम होने पर वेतन में से पैसे काट लिये जाते हैं। आरमेचर विभाग में कई मजदूरों का 100-150 रुपया प्रतिमाह काटा जा रहा है।

" काम के भारी दबाव के कारण फैक्ट्री में एक्सीडेन्ट अक्सर होते हैं। न्यूमैटिक हाइड्रोलिक प्रेसों से महीने में दो-तीन अँगुली-अँगूठे कट जाते हैं। उत्पादन के चक्कर में मैनेजमेन्ट मेन्टेनैन्स नहीं करवाती और इस वजह से **इस वर्ष दो बार भट्टियाँ फट चुकी हैं।** पहली बार एक मजदूर बुरी तरह झुलस गया और दूसरी बार हुये भारी विस्फोट में तो कई वरकर बाल-बाल बचे। मैनेजमेन्ट ने अपनी कमी मजदूरों पर डाल कर ओवन आपरेटर निम्बू लाल को जबरन हिसाब दे कर नौकरी से निकाल दिया। फैक्ट्री में एम्बुलेन्स नहीं है – 5 साल से साहब कोरे आश्वासन दे रहे हैं।

" क्यू एस लेबल लिये कम्पनी हर दूसरे-तीसरे महीने हमारा मेडिकल चेक-अप करवाती है लेकिन सोल्डरिंग के अति विषैले धूँयें को निकालने का प्रबन्ध नहीं करती। **फैक्ट्री में काफी सोल्डरिंग होती है और विषैला धूँआ फैक्ट्री के अन्दर ही अन्दर घूमता है। सब मजदूर छाती में दर्द और आँख में जलन से परेशान रहते हैं।** ऐसे में वार्निश की बदबू जले पर नमक छिड़कती है।

" आई एस ओ लेबल लिये है कम्पनी और आये दिन कैन्टीन के रास्ते में टट्टी तैरता पानी भरा रहता है। पेन्ट शॉप में जाने के लिये गन्दे पानी में से जाना पड़ता है। भयंकर बदबू मारती लैट्रीन के बगल में 8 घण्टे ट्रे धोनी पड़ती हैं। शिफ्ट छूटने पर बाहर जाने के लिये गन्दे पानी में से निकलना पड़ता है।

" कैन्टीन में चाय, मट्ठी, समोसा, गुटका, सिगरेट मिलते हैं और वे भी मार्केट रेट पर। महीने में एक-दो दिन रोटी-दाल-आलू से खानापूर्ति करते हैं, बाकी दिन कैन्टीन में भोजन नहीं बनाते। गन्दगी के कारण ज्यादातर लोग कैन्टीन की बजाय बाहर रेहड़ियों पर खाना खाते हैं।

"बड़े-छोटे साहबों द्वारा दो नम्बर में विभिन्न चोरियों और सरकारों को टैक्सों तथा बैंकों को ब्याज के भुगतान के बाद मार्च 01-मार्च 02 वर्ष की कम्पनी की बैलैन्स शीट 68 करोड़ रुपये मुनाफा दिखाती है। इस पर कम्पनी प्रेसीडेन्ट को 1 लाख 40 हजार, वाइस प्रेसीडेन्ट को एक

(बाकी पेज चार पर)

ताकि परेशान हों

✱ **एस्कोर्ट्स मजदूर** : " कभी अत्याधिक काम तो कभी बेलकुल खाली बैठाना – दोनों सजा हैं। पूरे जून माह एग्री मशीनरी ग्रुप में उत्पादन शून्य- सा रहा। रोज 8 घण्टे फैक्ट्री में खाली बैठाना भारी सजा है। इधर फस्ट प्लान्ट में मैनेजमेन्ट ने हर वरकर के परिवार की आर्थिक स्थिति की जानकारी सुपरवाइजरों के जरिये एकत्र करनी शुरू कर दी है। छँटनी के लिये इस्तीफों के वास्ते परेशानियाँ बढा रहे हैं।

" लिखा- पढी करते पुरुष कर्मचारियों को शॉकर डिविजन में असेम्बली लाइन पर लगाने के बाद मैनेजमेन्ट ने ऐसी महिला कर्मचारियों को भी लाइन पर लगाना शुरू कर दिया है। लीडरों के कहने पर आरम्भ में असेम्बली लाइन पर भेजी गई तीन महिलाओं ने वहाँ काम करने से इनकार कर दिया और मैनेजमेन्ट के ' काम नहीं , वेतन नहीं ' के जाल में फाँस ली गई। उनके बाद लाइन पर भेजी गई तीन महिलाओं ने लीडर से पूछा, ' हमारे बच्चों को रोटी तुम दोगे क्या? महीना- भर काम नहीं- वेतन नहीं के बाद तुम चुप हो जाओगे। ऐसे में पहले काटे गये पैसे दिलवाये क्या?' लीडर चुप हो गया और वे महिलायें असेम्बली लाइन पर क़ाम करने लगी। लाइन पर काम करते पुरुष महिलाओं को छेड़ेंगे के हव्वे की हवा शॉकर डिविजन के पुरुष मजदूरों ने निकाल दी। आठ- दस दिन से इनकार कर रही महिलायें भी लाइन पर लग कर कम्पनी के जाल से निकल गई। नौकरी से निकालने के लिये कम्पनी करे तो क्या करे ? "

✱ **न्यू एलनबरी वरकर** : " 14/7 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 15 जून तक दो- दो , चार- चार करके कम्पनी ने 21 बन्दे बाहर कर दिये हैं और कहती है कि निलम्बित मजदूरों को आरोप- पत्र बाद में देगी।"

✱ **अमेटीप मशीन टूल्स मजदूर** : " फरवरी और मार्च की तनखायें दो मशीनों को बेचने देने पर 11 जून को हमें दी। अप्रैल, मई और जून की तनखायें 31 जुलाई को ; 50 दिन की सर्विस- ग्रेच्युटी वाला हिसाब 5 अक्टूबर तक। श्रम विभाग और पुलिस की छत्रछाया में यह सब करने का समझौता है। चार महीने तनखायें रोक कर छँटनी – कम्पनी बहुत सस्ते में हमारी नौकरियाँ खा रही है। कम्पनी बन्द नहीं कर रहे , बस हम परमानेन्ट वरकरों को निकाल रहे हैं। कम्पनी , श्रम विभाग , पुलिस और नेताओं के गठजोड़ से पार कैसे पायें ?"

✱ **ट्रैक्टल टिरफोर वरकर** : " 14/6 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में मैनेजमेन्ट ने 12 परमानेन्ट मजदूरों को छाँट कर ले- ऑफ दे दिया है जबकि ठेकेदार के जरिये रखे 30 वरकर फैक्ट्री में काम कर रहे हैं।"

ऐसी है हकीकत.... (पेज तीन का शेष)

लाख , वर्क्स मैनेजर को 40 हजार के संग- संग सैक्टर- 24 स्थित फैक्ट्रियों का भी प्रमुख बना कर वेतन 17000 से बढा कर 25000 और सैन्ट्रो कार विद ड्राइवर , क्वालिटी कन्ट्रोल मैनेजर को 40 हजार , एक्साइज मैनेजर को 40 हजार तथा प्रोडक्शन सुपरवाइजरों को 5 हजार रुपये इनाम में दिये हैं। और मात्र तीन हजार रुपये महीना में इस कदर निचोड़े जाते **हम लिसनेवल आटोलेक मजदूरों को इनाम : शून्य-सिफर-जीरो !**

" तीन ठेकेदारों में से एक ही सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देता है। दो ठेकेदार 1200- 1500 रुपये महीना ही वरकरों को देते हैं ।"

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी. फरीदाबाद–121001

विचारणीय

बाटा कम्पनी ने फरीदाबाद फैक्ट्री मजदूरों के सामने हाथ खड़े कर दिये हैं। " विभिन्न समस्याओं" से निपटने में असफल रही बाटा कम्पनी ने फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री का सौदा फैशन शूज प्रा.लि. नाम.की गुमनाम कम्पनी से कर लिया है। "विभिन्न समस्याओं" में से कुछ यह रही हैं :

✱ सेमी- आटोमैटिक की जगह आटोमैटिक लाइनों द्वारा वर्क लोड में भारी वृद्धि और बड़े पैमाने पर मजदूरों की छँटनी करने की एग्रीमेन्ट 1983 में की थी। मैनेजमेन्ट- यूनियन एग्रीमेन्ट की बाटा मजदूरों ने हवा निकाल दी। आटोमैटिक लाइनों पर सेमी- आटोमैटिक लाइनों से भी कम उत्पादन हुआ। तनखायें काटी गई लेकिन मैनेजमेन्ट के हमले के लिये मजदूर टारगेट बने ही नहीं। डेढ साल की कसरतों के बाद कम्पनी को आटोमैटिक लाइनें उखाड़ कर फिर सेमी- आटोमैटिक लाइनें लगानी पड़ी।

✱ 1988 में तालाबन्दी के जरिये बँगाल में बाटानगर फैक्ट्री में छँटनी का वह सिलसिला शुरू किया कि वहाँ मजदूरों की सँख्या उन्नीस हजार से घटा कर 6 हजार कर दी है। लेकिन फरीदाबाद फैक्ट्री में झटके से छँटनी करने की स्कीमों को मजदूरों ने फेल कर दिया। रिटायर होने वालों की जगह नई भर्ती नहीं कर धीमी छँटनी ही बाटा मैनेजमेन्ट यहाँ कर पाई।

✱ 1990 , 1994 और 1998 की एग्रीमेन्टों में बड़े पैमाने पर छँटनी की योजनायें थी लेकिन उन पर अमल के लिये मजदूरों ने माहौल ही नहीं बनने दिया। हमले के लिये छिट- पुट और बेहद धुँधले टारगेटों ने बाटा कम्पनी की नाक में दम कर दिया।

✱ 1999 में एक दिन की हड़ताल- आठ महीने की तालाबन्दी के जरिये फरीदाबाद फैक्ट्री मजदूरों को ठोस टारगेट में बदल कर धार पर धरने का जाल बाटा मैनेजमेन्ट ने बिछाया था। दूरी व तटस्थता बना कर मजदूरों ने फिर खुद को टारगेट नहीं बनने दिया। छिपा कर रखी एग्रीमेन्टों के विपरीत मैनेजमेन्ट ने तालाबन्दी पर सैटलमेन्ट की प्रति नोटिस बोर्ड पर लगाई लेकिन इस पर भड़कने की बजाय ठण्डे रह कर मजदूरों ने इसे भी फुस्स कर दिया। इसके बाद दूसरी वी. आर.एस. स्कीम का भी मजदूरों ने बाजा बजा दिया।

इन हालात में बाटा कम्पनी ने फरीदाबाद फैक्ट्री मजदूरों से निपटने का जिम्मा अन्य को देने की योजना बनाई। स्टाफ कालोनियों को बेचने के लिये खाली करवाना बन्द कमरों में पकी कड़वी खिचड़ी का सामने आया लक्षण था जिस पर मजदूरों ने ध्यान नहीं दिया। इधर तीन कालोनियों के संग बाटा क्लब और नीलम- बाटा रोड़ पर प्लॉट की जमीनें बेचने की चर्चा है – कम्पनी की सम्पत्ति बेचने के वक्त साहबों के यहाँ यूँ भी सोने की बारिश होती है।

31 दिसम्बर 01 की तारीख के समय फरीदाबाद फैक्ट्री की लेनदारी- देनदारी का सौदा गुमनाम कम्पनी फैशन शूज प्रा.लि. से तय कर लेने के बाद बाटा कम्पनी ने जून में अखबारों में खबर छपवा कर मजदूरों में दहशत फैलाई है। केल्विनेटर से व्हर्लपूल के हाथों में फैक्ट्री सौंपने के वक्त दहशत का माहौल बना कर ढाई हजार मजदूरों को वी आर एस के लिये " तैयार" किया गया था। ऐसा ही माहौल बाटा कम्पनी की फरीदाबाद फैक्ट्री में मजदूरों पर हमला करने के लिये बनाया गया है। व्हर्लपूल के नौकरी छोड़ने वाले मजदूरों की हुई दुर्गत से एस्कोर्ट्स व यामाहा मजदूरों ने सबक लिया और अब तक छँटनी की मैनेजमेन्टों की योजनाओं पर ब्रेक लगाये हैं।

आयशर फैक्ट्री यहाँ से जा रही है वाली धोखाधड़ी की आड़ में छँटनी करने से अधिक विकट स्थिति इस समय बाटा फरीदाबाद मजदूरों के सम्मुख है। अपनी सर्विस- ग्रेच्युटी , प्रोविडेन्ट फण्ड और सेवा शर्तों के प्रति चौकसी तो जरूरी है ही, अधिक महत्वपूर्ण है नौकरियों पर इस नये हमले से निपटने का सवाल। बात बाटा कम्पनी से वफादारी की नहीं है बल्कि बात अपने हितों की देखभाल करने की है।

अब तक फरीदाबाद से हैदराबाद ट्रान्सफर करना कम्पनियाँ मजदूरों को सजा के तौर पर इस्तेमाल करती रही हैं। बाटा फरीदाबाद को फैशन शूज प्रा.लि. को बेचने की इस स्थिति में अब पलट वार के तौर पर मजदूर अपना ट्रान्सफर बाटानगर आदि फैक्ट्रियों में करना भी डिमाण्ड कर सकते हैं। नौकरी से निकालने में फेल हुई यामाहा कम्पनी ने फरीदाबाद फैक्ट्री से मज़दूर सूरजपुर फैक्ट्री ट्रान्सफर किये हैं।

फूँ- फाँ और आर- पार वाली बातें जगह- जगह मजदूरों को फँसा कर मरवाने के काम लाई जाती रही हैं। इसे ध्यान में रखने की जरूरत है।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। **RN 42233** पोस्टल रजिस्ट्रेशन **L/HR/FBD/73**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।